

ओहयाय

८.



आद्याआठवा॥६॥

६॥

ज्येष्ठा



(V)

(2)

॥ श्रीरविकुलमंउणायनमः ॥ धन्मधन्यलुम्हीसंतसज्जन ॥ राममहिमाप्ते
 विवेस्तीन ॥ त्वांतिलजानुभवसंपुर्ण ॥ दृष्ट्यमानसर्वतुम्ही ॥ गजभांग
 रीवंरित्तेवहृत ॥ तेभांडारीयासिमुत्तुविस्तरस्ता ॥ क्रीमित्रसभव्याप्तेजांत ॥
 आरथयेवजापातस्याभ ॥ एकमेवंवितेकर्त्त ॥ हृंभोगेऽहजापोवर्तमान
 ॥ क्रीमाकाङ्क्षावेंशोरपता ॥ प्रभेजनजापातस्यात् ॥ क्रवित्वीयद्यरचनां
 वीति ॥ हृंयेकजापोसरस्वति ॥ वंदुस्तवायतिवांबहृतिं ॥ परीमहिमांजापाती
 वकोण ॥ क्रीमिप्रेमकठागेऽवहृत ॥ हृंयेकजापातिभोक्त्रभक्ता ॥ क्रीरामकथेवा
 प्रांत ॥ वाल्मीकिवेकजापातस्याभ ॥ रामनामांवीमहिमांजाहुता ॥ येवजापोवेला
 सनाष्ट ॥ क्रीचरणस्ताक्षाप्रतापाहुत ॥ वीरंक्रीतनपाजापोयै ॥ घस्तुपो
 निरामवित्तनगेऽवहृत ॥ तेश्चीवासुरसमेवीतिसंत ॥ जामोमस्तमाध्यादग ॥ १

Joint Project of the
 Rajawade Sanskrit Mandal, Dhule and the
 Vaidika Vani Pratishthan, Mumbai

२४
तदृशाश्च ॥ मी शुद्धे समिप सर्वगाही ले ॥ ७ ॥ देवो दे ग्रीष्मेन्द्रप ॥ यासी मुक्तधा
हि मिष्टु ठाधीप ॥ परीवारा सहित जासुप ॥ रघ्जे उवल्लाहे पातले ॥ ८ ॥ मुक्तधा
हे लें दवार श्च ॥ परीतो नये बीमर्वथा ॥ कौदिक्ष घेउन गेला रघुनाथा ॥ वि
योग वेश्चायेत्यासि ॥ ९ ॥ मारे कुमर हे पञ्चप ॥ कौदिक्ष गेला येउन ॥ मा
स्याक्षीरामां चंद्रदन ॥ वैं मीह खेन पुडि ॥ १० ॥ यावियोगान क्लें चरून ॥ आकला
हि जाहु क्लेन त्रहिन ॥ नीजु क्लेन दाव याएर्ह ॥ शीक्षण रथाजाणी ज्ञे ॥ ११ ॥ इद्वा
उत्तर्यि सहित कौदिक्षा अला ॥ द्रावन नवजनक ॥ न गरा द्वा हिताल्काकी
क्षा सामोग गेला समर्पं ने ॥ १२ ॥ लै चिंत श्रीनारायण ॥ ऐसाये कै द्वास्त्रप ॥
देवतां जनने द्वे लोटां गण ॥ सप्ततांसि घातले ॥ १३ ॥ जनकृद्य गो नाग्य जाहु
त ॥ जेघरा अले साधुसंत ॥ अल्जी मिंजालों उपीत ॥ युर्वेष्टप्प ग्रन्थासि अस्ते



A portrait of a sage or deity, likely Vashishta, wearing a tilak and a shanka mala, with a serene expression.

Digitized by srujanika@gmail.com

3

॥१८॥ परसादें पहले विलोकुना ॥ स्मरण हे ग्राम संदर हो देजता ॥ कौविकाहे ग्रा-
ण देव कृष्ण ॥ सद्गुमार सपुत्र जापी लेते ॥ कृति वाच विश्रान्ती वंड कीर्ण ॥ कृति वा-
च स्पति ग्रान्ती सहस्रनयन ॥ कृति रजत यति उमां पति दोष देजता ॥ मुद्रेष धर
निवात लेते ॥ १९॥ वाटे याच्या चिर पादना जो दृष्ट्यान कोरी मीन क्रेतन ॥ याकावे
कुरवंडि करून ॥ पाहतां उक्तम सन्दृढय ॥ २०॥ जजन कासि लूपो विश्वामित्र ॥ हे
याद ग्राम शब्दे पुत्र ॥ यंत्रें वलो वधू ॥ सहस्र वदन वाक्य न करे ॥ २१॥ येणां मा-
र्ग तरीका वधुन ॥ सिद्धि पाव विलोक्या ग्राम यज्ञ ॥ वीस कोरी पीसीता सन ॥ मुखा दु
सहित मारी लेते ॥ २२॥ मार्ग विरह याजं करूठनी ॥ उद्धरली सरसी जो द्रवनंदि नी ॥ हा
र द्वादश उपाहा वग्यानयनि ॥ स्त्री लोनि येण्यं पातलु ॥ २३॥ साक्षात हेत्रो धनारायण ॥ रा-
यादु वांनद्रितां प्रेलन ॥ धारजा लेमु लें विण ॥ भाग्य उर्वति फँयेका ॥ २४॥ अववी

ता जैसा निध पोटला ॥ चीतामणि येडनि पुदा परिला ॥ चीक्कल अहम स्वयं जा
ला ॥ ग्रह द्वा धीत दुर्बेळा चें ॥ आ वास्त्रा भ्यासा वां त्युना ॥ भगवज जाले आपरो
सज्जाना ॥ चीमृति कास्वा पितां निधाना ॥ आकृस्पात लपा लें ॥ अ ॥ जवं भस्या
दय होय न पति ॥ रोंधरी व्यासा मैसी द्विति ॥ व्रष्टीली कक्षता ल्काव हेति ॥
आंगरं चैव दशजे कां ॥ अ ॥ हारं पाषाणा धरीतं पा तो चीतामणि होये तत्का
॥ त्रुणा घरं सपान लापातां ॥ सुवर्ण मारि ॥ पैं हो लै ॥ अ ॥ रकड़ा पां गाइ डुनति ॥ वै
रीते चीमि त्रहोति ॥ दीक्षोष प्रकारे विज्ञ मति ॥ राजे कुजीति येडनि धरा ॥ अ ॥
समयो चीत होये सुनति ॥ दीक्षांत यर्थत द्विति ॥ पदोक्षी निश्चीति ॥ येडनो रे
तया ते ॥ अ ॥ आसो जन द्वासि त्युले विश्वामित्रा ॥ उदयोपा वलु शा भास्या
त्रा ॥ धरा सि आला स्परसी मित्र ॥ सक्रद्ध आमि त्रात्र सद्र ॥ अ ॥ जन कें कर ली

(3A)

(h)

बदुंतादर॥ विश्वामित्रश्रीरामसोमित्र॥ निजसप्रेसीजागुनिंसत्वग॥ मन
 हे उनिंवै सविलो॥ अथ हेत्रोदेशीवेद्यपति॥ रामदेवो निजाश्रीर्घकरीति॥
 श्रीताद्याविहोया प्रति॥ नवरारघुपति सामीरा॥ ७॥ येवृत्याति सैंवरीत्रे
 छापण॥ गर्विन्वापत्वदवाद्यागुण॥ कार्यरमकरीण॥ रामासीके
 विजाक्रके॥ ८॥ मनांतस्योजनन्वन् वर॥ जरीजावाइहोइतरसुवीर
 तरीमास्या भास्या परीनाहियर॥ परीपाइधरसुठंजासे॥ ९॥ तवंतया
 मंरयांगनी॥ परमवपूरतरं दाचसीरीं॥ ववरालेजरितस्ती॥ सळ
 व्रतसेजत्पंते॥ र्परमाजीवैसात्तिजनक्रबद्धा॥ हाति घेउति वंपवमल्ला
 ॥ वीलोक्तसकलभुपाळण॥ त्रष्णिवृंदासाहितर्वै॥ १०॥ सकुलसरवीयास
 मीयजासति॥ श्वेतव्वामरेंवरीदान्ति॥ येत्रसुवाश्यांगंगारसावरी



५४
ती॥ श्री अधिष्ठात्रि पैर्य का॥ वा जे श्री भूवन पति श्री मुख्य गणि॥ आदि माया
प्रणव स्फीयं पी॥ इ दाष्टा ब्रेव रु तं पी॥ ब्रह्मां उ हं घटि मो दि॥ एव ब्रह्मां दीक्षा
ब्रेव जाहां ता॥ आ ए ले निजगंभी पिण्डीत॥ ती वें स्वरु पलावण्य अद्वुत॥ ध्रुव
वा लामि वर्णवे॥ शु॥ आ नं त धानि कृ र तो दु न॥ यु ठं ज्ञात् वाक् ति येउ न॥
जीयों आदि यु रु ष जागा कृ र र सा॥ त्वली या धी लु॥ या व्रह्मां उ
मं उ परमा शारी॥ जनका लं जा॥ दी॥ हरी॥ उ य मां द्य व पदु सरी॥ क्रोधो
आ वता रीं न से वी॥ शु॥ जे सं कु वन् सु वर्णति त॥ तैसं सर्वं गति ब्रेवे रा
जत॥ आ द्वर्ण ने त्र विक धात॥ मुख्य मां कृ न वर्णवे॥ ठ॥ मुख्य वीकृ त्वे दं त
पंति॥ बो उता पे परम दि सी॥ पाद्या वा ते पद्य या गहोति॥ रत्ने वि खुरत्ते
बो उ तां॥ ए॥ उ या न कि जां पी वा सुवास॥ ने ते निजाये महाकाना॥ जीयों

"Joint Project of
Sanskriti Bhawan Mandai, Dhule and the Yashodhan
Intra-university
Mumbai,"

अलविलगादि पुरुषा ॥ आपु प्रासवरूपेण विलसे ॥ १८ ॥ पद्मेवितांधरणीं
 ॥ पहुङ्गाडमटेजेस्त्वानि ॥ तेष्येंवासंतयेउनि ॥ लोकतभुलोनिसुवसा
 ॥ १९ ॥ चंद्रसूर्यव्याग्रोनिर्ज्यतिसे संतुर्णसुव्येंशब्दवति ॥ वर्णीसुज
 घोषदाढहति ॥ हतिक्रांत्यसारी ॥ २० ॥ आकृर्णदीयंतविश्वाकनय
 न ॥ प्राज्ञीविलसेसोग्यावेषंतन् ॥ पात्रीस्त्वगमदरेखीतापूर्णा ॥ वरीवि
 जवराङ्गक्रतसे ॥ २१ ॥ त्रौक्त ॥ हत्र ॥ संत्यानि ॥ ब्रह्मांक्षाणीवासरम
 णी ॥ सदा विलसतातिहोन्ही ॥ मुक्तज्ञाठीतारंगणेण्डेसि ॥ २२ ॥ ऐसर्वज्ञा
 नंकारिमंरिता ॥ त्रोभेमयांस्त्वयेत्नवचित ॥ नसेतुसरीपाप्तिंत ॥ राजकृष्ण
 मुहरी ॥ २३ ॥ विद्यत्प्रायेपितांवरा ॥ मुक्तलंगवेलिकीवीत्रा ॥ वरीमुक्तावक्तीपे
 क्षाकारा ॥ पद्मिंआपारतेजप्रांत्रे ॥ २४ ॥ हत्रांगुविमुद्दीक्रायंत्राक्षारा ॥ वज्र



लुउमंरितवृरा॥ ज्ञानीकां वनां वरीहीरेयोगा॥ जैसे हिनवृन्जोरिले॥ ४॥
 वांक्षेने खुरं दिव्यवरयं॥ रुद्रामुणीति वात्तांधरवं॥ जीवीयास्करपा
 वहुनि॥ क्रोटे प्रानं गोवाहिजे॥ ५॥ जासो ऐसिते वीत्त्वला॥ सक्षम स
 नाविलोक्तेऽग्नं॥ तोंक्रम्भिष्ठिपति माजि घनः सावला॥ परब्रह्मुत्तरादासि
 ला॥ ६॥ विजयानामें साविये प्रति वात्तात्यवापहेत्र विषयंति॥ स्थानाजीवि
 लसेजेसूर्ति॥ माश्रीप्रीति जउत्तित्॥ ७॥ अनः ग्रामसंहरस्यते॥ हेत्व
 तां द्वामाकीजुरुं दियेऽसेवे॥ सामन ज्ञानीवरजोडे॥ तमीधन्यतीर्गेयेसं
 सारीं॥ ८॥ बहुत जन्मयते पंत॥ तप व्रेत्रें असेलजीप्रत्यंत॥ तरीवहामज
 होइलद्वांत॥ विजये निष्ठितज्ञापायां॥ ९॥ नवमवर्तनं क्रोयाद्वायां प्रति॥ को
 णातिमज्जपावेत्र ग्रान्ति॥ रघुविरमज्जरिजोडे उपति॥ तरीक्रीजगते धन्य



"Joint Project of the Banashankari Mandir, Dhule and the Vaidika Mantra Shikshan Prayog, Mumbai"

(६)

मंगी॥४॥राजीवनेत्रसावका॥स्वरयठसासर्वतजागदा॥जाषुत्रहातिंदा
 लीनयासिमाळा॥मगतोसोहगनवर्णवे॥५॥तोंविश्वामित्रस्यगोजन्नसा
 प्रति॥आतांकोदंउजाठा देंस्वर्णगति॥६॥गीरात्तेष्यंसर्वन्तरपति॥जेउत
 घार्थिओरयोग॥७॥जाषुपत्रंवालवंप्रतंउ॥सावरीतेविलेंवंउकोदं
 आ॥सहस्रविरांवेदंउ॥वेटटीतजागत् नटचैवी॥८॥मगबहुंतगज्जभार
 लाविते॥संगमंउपावोटोनिर् यपीते॥हेषतांसर्वगजेदवकले॥स्मृण
 तिहेंनुवेकोष्टहांसी॥९॥येक्तस्यपतिहेन्नीपैव्याय॥उवलिलैसान
 दिसेखुप॥येक्तांसुट्ठाव्यव्यव्यंपे॥गेलाबुद्धर्दर्पिग्नोनियां॥१०॥येक्तमा
 हांविरबोलता॥आन्नीकोउकपाहोंआलोंयेष्यं॥येक्तस्यपतिजनकाच्चा
 मिहेबहुंत॥स्यपौनिभैसपातठों॥११॥जनकमांगेतयोने॥हेविस्यपास

वायवेऽनिस्विहस्ते ॥ सीमालाविरीदस्त्वं ॥ सहश्राश्चनुवलेहं ॥ ८३
॥ ऐसीया वापसउच्चुना ॥ जोपजेह्लाविष्टुरा ॥ तासीहेयनाकीस
गुणा ॥ माधवार्थीत्त्वहस्तं ॥ ८४ ॥ तटस्तपाहतिसकृदविरा ॥ कोन्हीनदे
तिप्रस्थेत्तरा ॥ कोन्हीसाक्षरनिधीय ॥ वायउच्चुनुभाविति ॥ ८५ ॥ मुठन
पाठवितांभावणा ॥ प्रधानांसरि तपाला धांबोना ॥ सभागृजबजलीसंपु
र्ण ॥ हृषणतिविश्वदेविंघालेहं ॥ ८६ ॥ आतप्तिनोहेकरी ॥ बठेंवीउच्चु
ननेइहनोवरी ॥ कोन्हीत्यारा शया भीतरी ॥ वंडिवष्ट्यापचढवित्तहा
॥ ८७ ॥ ज्यानक्षिसीस्मयोरावणा ॥ उवाधनुषा वावेलापणा ॥ तरीक्षणमा
त्रेमोडुनटाक्षिना ॥ कुट्ट्रेकरीनआतांखी ॥ ८८ ॥ प्यांहालविजावैलास ॥ वंडि
घातलेत्रीदवा ॥ ऐरावति समवेतदेवेद् ॥ समरभुमिसीउलथीत्तुरा ॥ ८९ ॥



॥ तेष्मिंश्च वण प्रताक्षुरा ॥ व्याप्त वल्लवया वायेऽसीर ॥ उपदेनियां मेर
 मांदाया ॥ कंउ त्रैसं उत्तिविषया ॥ एष्मित्तु वलीन जाक्ष साता ॥ घालुं स्वेस
 वै समुद्रांता ॥ कंरीष्टोऽज्ञवैसा मरीतान् या ॥ शपामात्रेण ग्रोग्नैन मिं ॥ वा त
 रीष्मातां हैवीष्मिज्ञांया हि ॥ हं व्याप्त माता ॥ नित्यवल्लवाहि ॥ होइन जन्म कावा
 जावाइ ॥ सकृदराया हैवतां ॥ वह भुषणं सावरुना ॥ व्यापावै द्वारि
 लपावण ॥ गजबलीलें याव ॥ त्रैमाता ॥ आतिउहि गनतेजाहारी ॥ अ
 त्यष्मेयायां पतित्रीनयनां ॥ त्रैयुरां तद्वामहनदहनां ॥ सुशें व्याप्तमुव
 उगावतां ॥ गजस्फजनकापं ववक्रा ॥ या उत्तेनावेंतों उक्तामें ॥ सहा
 विवाकरीं सीघ्रकाठें ॥ माहां हैवतें प्रस्वं दें सक्तरें ॥ याधनुष्यावरी वैसविं
 ॥ अणजाहो अंखे मुठपीढवासिनि ॥ प्रंग रक्तकारी खो आही जननि ॥ यारा

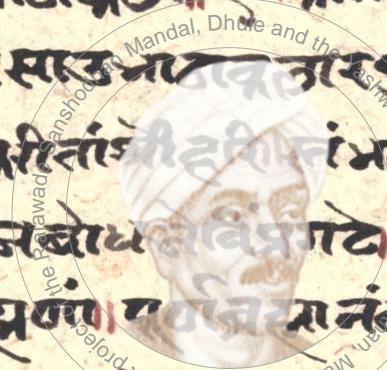


वणां व्याप्रात्ति होगी ॥ ने इंसुरदा निसत्वरा ॥ ७५ ॥ ऐसें ज्यान कि प्रार्थी ते वे
बोहै वतें धां बैनलंगी सद्वद्गे ॥ उत्तरूपें सिसद्वक्ते ॥ येउ निं बैसलंगी व्यापाव
री ॥ ७६ ॥ नवकोरी कात्पायनि ॥ वौ सद्वी कोही माहां योगिनी ॥ यां सहित का
बीकायेउनि ॥ धनुष्या की देसत् ॥ ७७ ॥ धनुष्य अज्ञवलुंगे लाद्वावत्रा ॥ तवं
तें नट्डे बीजानुमात्रा ॥ बैठें तारिछे विसही वरा ॥ जालें वारी रानि स्तेजा ॥ ७८ ॥
॥ दिजपंति नें आधर प्रांत ॥ वात्रा निजन द्रव बैठं रगरि ता ॥ वापउ भें द्वारी तां
त्वरी ता ॥ जालें विषरी तते धवां ॥ ७९ ॥ माहासउ नमढे ॥ तैसे वापउ लश्ले
वारेर भुमी वरीय दिले ॥ वापवैसलेऊ जावरि ॥ ८० ॥ जैसाथु खिं गियासु रहे
ता ॥ यावरीठे विलापैं यर्वना ॥ तैसायउ लालं क्रनाश ॥ धनुष्य अज्ञुत उगाव
री ॥ ८१ ॥ रावणापउ तां नुत बी ॥ सभेसीउ धडली धु बी ॥ दा है मुखी नृति का

(८)

भरलि॥ आनंदलीजनकामजा॥ आहाहीसुखीरुधीर वाहत॥ ब्राह्माविस
 जालाप्रत्यंत॥ मणेधावांधावांसमस्त॥ धनुष्टवरीत व्रादवें॥ ८॥ वरणाल
 ठेहनकाशति॥ मास्त्रप्राण वाचे ठेनिश्चीति॥ परीइङ्गजीतकुंभकृष्णं
 तिं॥ उजानिर्दृष्टि तिजाया॥ नायजबल्लीसभासमस्त॥ मृणतिआ
 तांकोणाजाहेववरंता॥ हेव्यापुत्रवीलुषुदुत॥ माहांप्रानश्चवोएव
 लय॥ यासभेषध्येंप्रतायवंता॥ वोपते नाहिरण्यायंति॥ कोशिकेंद्रैसीहै
 वोनिसात॥ खुणावितरामवंदा॥ स्वप्ननरविरयंवानतां॥ त्रैभुवनवं
 धाराजीवंनयनां॥ पराणदुर्घारघुनंदनां॥ ताटिव्रादपनांउठवेगीं॥ ९॥
 जैसानिद्रिस्तसीहैजागाकेला॥ यज्ञीवेंज्यातवेदफुंदिला॥ तैसाविश्वा
 मित्रेंतेवेला॥ खुणाविलारामवंदा॥ १०॥ व्रपठोहवजनवाउदासा॥ नन्त

वरुल्लाजाहि योङ्गा॥ प्रवपाक्वासमरधीरा॥ आसुरसंकारकाउठिंकें
 ॥८॥ त्रैसिन्धिपांयतांताल्काळा॥ उदयादीवरीयेतरविमंउळा॥ तैसमाम
 तमाठनिळा॥ उठोनिउभाठाक्वाहा॥९०॥ कीमाहांयामिहोतांपुण्डुति॥ ताल्का
 लप्रगटप्राध्यमृति॥ तैसाउभाठाक्वाहायुपति॥ गजेवाहातिटक्कम्बा॥
 १॥ कीप्र० हादस्मरणाकरीतांकीहरीपांभलुनिप्रगटशीनरही॥ कीवेहं
 तज्जनहेतांप्रतरी॥ निजब्दोध्येविंगाटे॥१॥ वंदोनिश्रिगुरवरणां॥ तै
 संवीनमिलेंसक्कद्वास्मणां॥ पर्णज्ञप्रानंदामरणां॥ देहपुरायांवंद्यजे
 ॥७॥ श्रीमद्विरक्तब्रह्मव्यासी॥ तज्जयप्राविष्टावोपहुंनवी॥ यालातीद्वार
 युतिरविहारी॥ उठतल्लालतेधवां॥ थास्मजेसवैसठान्यवरा॥ द्रेतेनाना
 यरीवेश्वराणा॥ परीसवंतश्रेष्ठामवंद्वा॥ नगरांतश्रेष्ठयंजैसा॥८॥ किंगा



१

स्थानाजीवेदांत॥ कीलिर्जगामाजीवप्तीनाश॥ श्रीरामतैसप्तमर्षीसभेमाजी
 विरहते॥ अद्भुतीलादेखोयं पिपास वंद्र॥ उच्चं वर्गदेलं श्रीतामुखसमद्र॥ नव
 मेघरं गरुदुविशरंगमं रथपति यात्रा॥ क्रीष्णानं गवोवाकुन॥ राक्षावे
 उम्भवामुखवरन॥ जोम्पारि वत्रवाहापंचानन॥ जातलसुनि धनुष्या
 ते॥ गदेवतांगमसकुमाराया वर्त्राम् द्वेष्टतरा द्योक्रोमठगात्र रघु
 विश॥ प्रचं ऊरोरधनुष्यहे॥ अमव्यासीलसिवदोर॥ तैसेहें द्वोहं अधनुष्य
 शोर॥ रघुनाथमर्तिपनोदर॥ द्वैसं उवर्गहें याते॥ ५००॥ मदन्तारीवेहें धनु
 ष्यशोर॥ दशारथकुमरसकुमाराया हाता तपरमुर्धरा आणीवारहाया
 लुम्बा॥ १॥ वृक्षहतदेवतहावंद्र॥ परमकोमठरघुपतिवेक्ष॥ अहातातपरम
 उर्धरा आणीवारहाया लुम्बा॥ भा श्रीव्रक्तोहं उपरमज्ञोरा लघुआहतिश्री

५४

ग्रन्थिविश्वरा॥ हाहसात परमसंदर॥ आपीवार हायणतुश्चाण॥ ब्रीतीमांसं
 वेनिइत्तरा पुरुष लुजसमान्प्रसवात्॥ हाहसात परमसंदर॥ आपीवार
 हायणतुश्चाण॥ क्रोमकांगद्वामसंदर॥ ऐसानाहिं श्वसीवग॥ हाहसात प
 रमसंदर॥ आपीवार हायणतुश्चाण॥ अश्वामठांगमनोहर॥ ऐसादि सत्त्वा
 हीष्ट्रश्विवग॥ हाहसात परमदुर्धरा आपीवार हायणतुश्चाण॥ दुजास
 रावणयेतांवर॥ हाहसेहस्याननिधार॥ हाहसात परमदुर्धरा आपीवार
 हायणतुश्चाण॥ ऐसाकृतिमांसीविवर॥ ब्रीतुजावरनवीनत्यर॥ हाहा
 तात परमदुर्धरा आपीवार हायणतुश्चाण॥ ब्रीताकिजये सिम्माये आव
 धर्मी॥ बापनहेहावट्टोवैती॥ हायणत्यजुनिनिधर्मी॥ मज्जरामासीक्रांत्य
 धीनां॥ ऐसं ब्रीतेवें अंतर॥ जलो निमांजगते द्वारा हंउपीरोनिश्चं



उविरा॥ कोहं जसमीय पत्तला॥ ४॥ द्वारशमाहं गजदिगाज॥ संवाला
 वहरपुराज॥ धनुष्य युक्ष हं उसमसहज॥ देस्वोनिधरम् च पठधांची
 नला॥ ५॥ श्रीगमसवाला हं प्रकर॥ हं श्रीवरीके उषुंडाहं उ॥ भवधनुष्य
 युक्ष दिवं उ॥ करीह यासां निधि॥ ६॥ ते द्वारहं दरहं पद्मकानन॥ विमहस्त
 द्वावदन॥ वीसक्रम्भें दीक्षां पुणा॥ कहं उजाणा युक्षतेष्य॥ ७॥ पद्मवनी
 निघेगजलवलाही॥ मगत्यर्थी नं गतनां नाहि॥ ते सीद्वारशमीह
 स्तिव्रमलें पाहि॥ तुउवितजाला रम्युवि॥ ८॥ तटस्तपाहति सकृजने
 ॥ मृणाति वीजइ होरघुनंहन॥ श्रीतानवरी होसगुण॥ यासीन्द्रघालोमि
 जग्राला॥ ९॥ आनंदमये सकृज ब्रात्पण॥ वीतीश्रीगमांसीजये कृष्णा
 न॥ सूर्यातेहं भव व्यापमोउन॥ राकिं लौ वरीरघुविर॥ १०॥ येकल्पणास्ती

१०४

रामस्तुमारा॥ निजपंकजतनुं कीर्तोगा॥ भवदोहं उप्रवं उशोर॥ उवले
लक्ष्मेसंयणते॥ १५॥ येव्रम्भाति वीभगों श्रीभासा वेणापा॥ येव्रस्तु पाति संक्षीही स
उहापा॥ परीपर्वतकारगजविशासन॥ नलगतां शपाटा कीलयै॥ १६॥ घरो
द्रवर्गाहापा हिसता॥ परीप्रभागी उपसरी तानाश्च॥ गगनिंसवैतालघुभास
ता॥ परीप्रभाजा द्रुतनवर्णवै॥ १७॥ असातेवेकरघुविर॥ विघ्नप्राप्तेषु तरी
बीर॥ द्विग्नो भ्रमनो हुम्॥ सदृक्षु ऋक्षातरुष्ठति॥ १८॥ जांगोसिसर्वस्तु
मारा॥ कोपक्षतनुं त्रामन्त्रादि॥ १९॥ तस्मावेनिसत्वरा॥ व्रटीप्रदेवीवेषी
ठे॥ २०॥ प्राणं मुहुटरत्नरववीता॥ अवर्णनेत्राविराजता॥ मस्तविवेकेंशना
नीयर्थता होहिंकरोनिउतरठे॥ २१॥ द्विग्नोरवयाति तपुषपा॥ आलंकसुवा
सेंभरतेंगगन॥ त्यासुवासेंवेधुन॥ ग्रीछीद्वक्त्रभ्रमतसे॥ २२॥ श्रीरामतनुं



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com